आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 1/मार्च 2022
Received: 13/03/2022; Accepted: 18/03/2022; Published: 24/03/2022

२१ वी सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जन जीवन

डॉ.श्रीमती. सी एन होम्बली
सह-प्राध्यापिका,हिंदी
सरकारी प्रथम दर्जा महाविद्यालय,
अल्नावर जिला- धारवाड़ दूरवाणी
संख्या ; ९८८०५९४३८१

डॉ. श्रीमती. सी एन होम्बली ,**२१ वी सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जन जीवन**,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 1/मार्च 2022 , (39-42)

२१ वी सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में आदिवासी विमर्श को लेकर काफी चर्चा हो रही । देश को आजाद हुए ७५ साल हो चुके बड़ा लोकतांत्रिक होने का अहसास लोगो को किया जाता हैं । आदिवासी शब्द भारत के अल्पसंक्यक वर्गों की एक बड़ी आबादी को ध्योतित्व करता है । भारत के आदिवासी लोगो को ट्राइब कहा जाता है। जल, जंगल, जमीन, भाषा, रीति, संस्कति, रिवाज लोक, व्यवहार, प्रकृति प्रेम निश्चलता विश्वास जो उसके केंद्र में था। आदिवासी समुदाय इससे दूर होने लगा। इससे अलग तरह की सामाजिक सम्हितावों का बनाना शुरू हुआ। शिक्षा से दूरी एवं अज्ञानता के कारण आज का आदिवासी अपने आपको मुख्य समाज से अलग पाता है। उनके लिए जो स्कूल खोले जाते है ,उनमे उनकी भाषा में पढ़ाई नहीं होती है। आदिवासीयों के समक्ष मझदूर बनने ,गुलाम का संकट मंडरा रहा हैं। आदिवासी जीवन पर केंदित उपन्यासकारों ने तटस्थ रूप से विश्वास के साथ अपने उपन्यास मे पात्रों के द्व्हारा मानवीय संवेदनाओं को उजागर करके समस्या का हल डुंडने का प्रयास किया।

देवेन्द्र सत्यार्थी के उपन्यास 'रथ के पहिए 'में मद्य प्रदेश के गौंड आदिवासियों का जीवन उपन्यास में आनंद नामक पात्र आदिवासियों की जीवन पद्धति से प्रभावित होता हैं। जहां इनके जीवन में सहजता है, स्वाभाविकता हैं वहां अशिक्षा,अन्धविसवास और शोषण भी हैं। अत: इन समस्यावों के लिए वह कलाभारती नामक आश्रम की स्थापना करता हैं। उपन्यासकार संजीव ने 'जंगल जहां शुरू होता हैं 'इस उपन्यास में थारु जनजाति, ढकू की राजनीति, धर्म, सामान्य जन है। इस उपन्यास में संजीव ने थारु जाती के जो आदिवासी हैं उनपर डाकू द्वारा होनेवाले अन्याय, अत्याचारी, शोषण का यथार्थवादी चित्रण किया हैं। उपन्यास के केंद्र में पश्चिम भूभाग में जंगल हैं। जहाँ पर हत्या, बलात्कार, डकैती, अपहरण अपना

अस्तित्व में वहां के जंगल के वनास्पतिवों का मुख्य योगदान रहा हैं उपन्यास मे थारु जनजाति के लोगों का वर्णन हैं। शासकों के अत्याचार के वजह से उन्हें किसी तरह से मानसिक और आर्थिक पीड़ा से झुजना पड़ता है यह भी बताया हैं। उपन्यास में थारु जनजाती अपनी समस्याओं को देवी देवताओं के माद्यम से सुलझाना चाहते हैं। विसराम बहु की बड़ी लड़की दुलारी को सांप काट लेने पर डाक्टर के द्वारा उसका उपचार न कराकर ओसा को समर्पित कर दिया जाता हैं –"लड़की मरी पड़ी थी। उसपर मन्त्र पढ़ते हुए झूम रहे थे ओसा । उन्हें अभी भी विश्वास था कि वे उसे बचालेंगे। काश ! यह बच्ची पहले ही अस्पताल में ले जाई गई होता ।"१ इस प्रकार संजीव उपन्यास के माद्यम से समझाना चाहते हैं की अज्ञानता और अंधविश्वास के कारण उसी बच्ची की जान गवानी पड़ती हैं ।

'जंगल के फूल' उपन्यास में नारी की स्थिति गति के बारे में लिखा गया इसमें गौंड जाती के बारे में बताया गया है । नारी वास्तव में रीति रिवाज, नियम एवं प्रथावों से अनजान नहीं हैं । उपन्यास में जलीय घोटुल के सिरदार झालर से कहती है कि "हाथ में डुगडुगी लेकर बन्दर की तरह औरतों को नाचते हो और जब औरत अपना ढोल पीटना चाहती है तो तुम ढोल की द्रन्थीली कर देते हो और कहते हो भगवान ने लिखा है की तुम ढोल नहीं पीट सकती ।"२

आदिवासी जनजातियों की अपनी ही रीति रिवाज होते हैं योगेन्द्रनाथ सिंन्हा का 'वन के मन में' उपन्यास में 'हो' नामक आदिवासी लोगों के रीति रिवाज का वर्णन किया हैं । जिनमे प्रमुख हैं " चील मुर्गी के चौगाना को उठा ले गई या नहीं ? अर्थ सब कुछ तय्हो जाने के बाद ब्याह के पहले ही कोई दूसरा युवक लड़की को उठा ले जाएगा घटना सामने हुई तब तो निश्चय है कि एसा होगा ही औरिसका कोई काट नहीं ,यदि दाएँ हुई तब तो निश्चय हैं कि ईसा होगा ही और इसका कोई काट नहीं, यदि हुई तो निश्चित होते हुए भी उसका उपचार हैं,बाएं, तो संदेह है की एसा होगा या नहीं । कुत्ते ने जमीन खोदी ? अर्थ तो किसी पक्ष का कोई मर्ज रोग,विशेषकर जन्म होते ही बच्चा । " ३

'पठार पर कोहरा' उपन्यास में रमेश कुमार सिंह ने नारी अस्मिता की खोज ,नारी चेतना आदि पर जोर दिया गया । उपन्यास मे रंगेनी छोटे उम्र में ही विधवा बन जाती और वह अनेक पुरुषो से शोषित भी होती है । अंत में वह बलात्कार भी की जाती हैं । वह गर्भवती बनती है तो पंचायत उसे दुसरे विवाह करने को कहती है । लेकिन वह पुरुष समाज से पीड़ित और घृणित होकर पंचायत के मुखिया से कहती है कि "मरद के नाम से घिन आती है हमें ....अब हमें किसी मरद पर भरोसा नई । "४

मैत्रेयी पुष्पा जी रचित 'अल्मा कबूतरी'उपन्यास में लोक नृत्य का चित्रण हुआ है । आदिवासी कबूतरा जाती घुमक्कड़ होती है । सुबह से लेकर शाम तक वे लोग मजदूरी.शिकार चोरी.डकैती आदि में रचे टाक लगाते रहते हैं । दीपावली का अवसर हो या होली का इन अवसरों पर इन्हें कभी –कभी बुखे भी रहना

पड़ता है। भूखे रहकर भी लोग आनंद के साथ हँसते हुए त्यौहारों को मना लेते हैं। वे लोग त्योहारों में। को मना लेते। वे लोग त्योहारों को मन लेते हैं। वे लोग त्यौहारों को मना लेते। वे लोग त्योहारों में समूह में नृत्य में दस से बीस बीस नर्तक और वादक हिस्सा लेते हैं। नृत्य की गति वाध्ययंत्रो के साथ होती है। पुरुष और स्त्रियाँ चारों ओर घेरा बनाकर नृत्य करते हैं। ढोल की ले पर गीत गाते हैं।

'कबूतर' जाती के बस्ती की पहली माँ थी भूरी। रामसिंह का इतिहास माँ भूरी से प्रारंभ होता है। उसने अपने बेटे के हाथ में कुल्हाड़ी,डंडा न देकर पोथी और पाठी दी। भूरी अपने बेटे का भविष्य उज्वल देखती। उसके लिए वहा 'कज्जा'लोगों को अपना देह बेचती। वह बेटे को पढ़ने में जी जान से मेहमान करती है। राम्सिम्हा पढ़कर अध्यापक बनता है। वह सभ्य रहने की कोशिश करता है,लेकिन सभ्य समाज उसे नहीं स्वीकारता।

पुलिस सिपाही कहता है "रामासिम्ह नौकरी मिली है, हमारा हक़ मारने का हक़ नहीं रोटी मिल गयी तो तू न्याय माँगने के लिए लड़ने लगा। न्याय लेग्ग किस्से ?डंडा, रायफल,हथगोले जैसी ताकतें तो हमारे पास है बेटा। तु क्या सारे देश पर यही ताकत हुकूमत करता है। "५

उपन्यासकार रणेंद्र ने अपने उपन्यास 'ग्लोबल गावं के देवत'में विकास के नाम [पर किस प्रकार झारखण्ड के आदिवासीयों का शोषण आत्मसम्मान अस्तित्व तथा अस्तित्व की रक्षा और निरंतर संघर्ष और जूझते रहने की ह्रुदयाद्रवक कहानी का इसका चित्रण किया हैं। आज हम कहते है कि विश्व एक गावं बन गया है लेकिन अपनों से हम उतना ही दूर गए है भुमंदालिकरन के नाम पर शोषण का नया तरीका पुन्जिवायों ने ढूंढ निकाला है। उसे उपन्यासकार प्रकाशित करते। भुमंडलिकर्ण आदिवासियें के समक्ष एसा खतरनाक राक्षस के रूप में आ गया जो उनका जीवन बर्बाद ही कर देता है। आदिवासियों के समक्ष एसा आ गया हो वैसे "एक तरफ इन खानों में मजूरी दी तो दुआरी तरफ बरबादी के सम्जाम्भी खड़े किए। पिछले पच्चीस तीस सालों में खान मालिको ने जो बड़े गढ्ढे चोदे है बरसात में इन गढ़ेढो में पानी भर जाता है। और मच्छर पलते है। सेलेबल मलेरिया यहाँ के लिए महामारी है। महामारी मुंडी कटवा से साल दो साल पर भेंट होती है किन्तु इस्जान मारू से तो रोज भेंट होंगी। " ६

देवेन्द्र सत्यार्थी के उपन्य 'रथ के पहिये ' में मध्यप्रदेश के गौंड आदिवासियों का जीवन चित्रण है। उपन्यास में आनंद नामक पात्र आदिवासीयों का जीवन चित्रण है । उपन्यास में आनंद नामक पात्र आदिवासियों की जीवन पद्धति से प्रभावित् होता है। जहां इनके जीवन में सहजता है,स्वाभाविकता है वहां अशिक्षा,अन्धविश्वास और शोषण भी है। अत:इस समस्याओं के निराकरण के लिए वह कलाभारती नामक आश्रम की स्थापना करता है।

आज कहा जा सकता है कि उपयुक्तादिवासी उपन्यासों आदिवासियों की दुर्भल आर्थिक स्तिथि,अंधविश्वास ,शोषण पीड़ा ,मज़बूरी ,अन्याय अत्याचार आदि पहलुओं का अत्यंत बारी की के साथ चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

क्रम संख्या	ग्रन्थ का नाम	लेखक का नाम	पृष्ट संख्या
१	जंगल जहां शुरू होता है	संजीव	२१
२	जंगल के फूल	राजेंद्र अवस्थी	१८२
३	वन के मन में	योगेन्द्र नाथ सिन्हा	१९
४	पठार पर कोहरा	रमेश कुमार सिंह	७०
५	अल्मा कबूतरी'उपन्यास	मैत्रेयी पुष्पा	१०४
६	'ग्लोबल गावं के देवता	रणेंद्र	१३

****